नवम्बर 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

ज्ञानीपुरुष का परम विनय करना, वह खुद अपने आत्मा का विनय करना कहलाता है, उतना आत्मा प्रकट होता है।

परम विनय अर्थात् पूरी दुनिया उसे दुःख दे, तब भी समता न चूके वह है परम विनय।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 13 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 145
नवम्बर 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 28 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 100 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 100 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

परम विनय

संपादकीय

वीतरागों का पूरा मार्ग ही विनय का है। विनय धर्म की शुरुआत हिंदुस्तान से होती है। हाथ जोड़ने से लेकर साष्टांग प्रणाम करने तक की सभी क्रियाएँ विनय धर्म हैं। जैसे पढ़ने के लिए गुरु के विनय में रहना ज़रूरी है वैसे ही यहाँ पर अक्रम में मोक्ष का ज्ञान प्राप्त करने के लिए चाहिए सिर्फ 'परम विनय'। परम विनय से ही मोक्ष है।

परम विनय अर्थात् अहंकार रहित स्थिति। जैसे-जैसे अहंकार खत्म होता जाता है वैसे-वैसे परम विनय उत्पन्न होता जाता है। यहाँ पर परम विनय का सरल व्यवहारिक भाषा से लेकर ठेठ तात्विक गूढ़ अर्थ समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि परम विनय अर्थात् हम से किसी को किंचित्मात्र भी दुःख न हो। वाद-विवाद न हों, दखल न हो, नियम न हों, किसी की खराबी नहीं निकालें, किंचित्मात्र किसी की भी विराधना न हो। जहाँ पर अधीनता, लघुत्तम भाव, अभेद दृष्टि, व प्रेम हैं, वहीं पर परम विनय की प्राप्ति होती है।

गाढ़ विनय और परम अवगाढ़ विनय को समझाते हुए दादाश्री कहते हैं, 'अविनय के सामने विनय करना वह गाढ़ विनय कहलाता है और सामने वाला यदि अविनय से दो धौल लगाए तब भी विनय रखना वह परम अवगाढ़ विनय कहलाता है।' परम अवगाढ़ विनय जिसे प्राप्त हो गया है वह निश्चित ही मोक्ष में जाता है, जो आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद ही संभव है।

अक्रम ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज्ञानीपुरुष उसका भाव मूल्य समझाते हुए बताते हैं कि यहाँ पर सिर्फ दो ही चीज़ों की ज़रूरत है : 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी नहीं जानता' वह भाव। यहाँ पर ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार की योग्यता नहीं देखी जाती, सिर्फ आपका विनय ही देखा जाता है। इस जगत् में मोक्षमार्ग के लिए सब से बड़ा गुण यदि कोई है तो वह है 'विनय गुण'।

परम विनय अर्थात् संपूर्ण समर्पण। ये दादा ही ज्ञानीपुरुष हैं और ये ही मुझे मोक्ष में ले जाएँगे, वह निश्चय ही परम विनय है। ज्ञानीपुरुष का परम विनय करें, वह अपने खुद के आत्मा का ही विनय करना कहा जाएगा। उतना ही आत्मा प्रकट होगा। परम विनय, वह प्रज्ञा भाग है। जब तक भगवान के साथ धातु का मिलाप नहीं हो जाता और संपूर्ण दशा प्राप्त नहीं हो जाती तब तक परम विनय रहना चाहिए। प्रस्तुत संकलन में दादाश्री कहते हैं, जिसमें जितना विनय उतने ही उसे भगवान प्राप्त होते हैं। और जिसमें परम विनय है, उसे तो पूर्णतः भगवान प्राप्त हो जाते हैं। महात्मा गण परम विनय से संबंधित इस ज्ञानवाणी का आराधन करके, उससे संबंधित पुरुषार्थ करके ठेठ (अंत) तक ज्ञानीपुरुष के परम विनय में रहकर मोक्षमार्ग को पूरा करें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

परम विनय

विवेक से परम विनय तक

मोक्ष का मार्ग क्या है? विवेक में से सद्विवेक, सद्विवेक में से विनय, विनय में से परम विनय, और परम विनय से मोक्ष।

विवेक अर्थात् खरे-खोटे को अलग करना। सद्विवेक अर्थात् जो अच्छे को ग्रहण करवाए। विनय अर्थात् जिस प्रकार व्यवहार के अनुसार चलना चाहिए, उससे आगे जाना। परम विनय अर्थात् जो दिखाई देता है उसके प्रति आदरभाव नहीं लेकिन जो नहीं दिखाई देता उसके प्रति आदरभाव। विवेक से संसार चलता है, विनय से धर्म होता है और परम विनय से मोक्ष होता है।

प्रश्नकर्ता : विवेक, बुद्धि से ही उत्पन्न होता है या फिर साहजिक हो सकता है?

दादाश्री : हाँ, बुद्धि से। बुद्धि के बगैर नहीं हो सकता। बुद्धि के प्रकाश से ही विवेक रहा है।

प्रश्नकर्ता : विवेक, बुद्धि के प्रकाश से, और विनय?

दादाश्री : विनय भी बुद्धि के प्रकाश से।

प्रश्नकर्ता : दोनों बुद्धि के प्रकाश से ही हैं।

दादाश्री : और परम विनय, ज्ञान के प्रकाश से।

वाणी, वर्तन और विनय मनोहर होने चाहिए

भगवान ने कहा है कि बोलने में विवेक रखना, विनय रखना। विवेकपूर्वक बोलना चाहिए, विवेक रहित नहीं। उसमें जोखिम है। सूरत की कोर्ट में एक वकील ने ऐसा कहा, 'माइ ऑनरेबल जज इज डोजिंग (मेरे माननीय जज झपकी ले रहे हैं।)' अब वे खीर खाकर आए थे तो थोड़ी झपकी लग गई, तब क्या कोई गुनाह हो गया? उनसे हमें न्याय प्राप्त करना है। वह साफ दिल का आदमी था इसलिए कह दिया। उस दिन तो साहब गुस्सा नहीं हुए। उस दिन तो साहब ने खुश होकर बात की लेकिन अंत में जजमेन्ट में मार दिया क्योंकि ऐसा नहीं बोलना चाहिए। विवेक होना चाहिए। जब तक जगत् व्यवहार की आपको ज़रूरत है, तब तक जैसा मनोहर लगे, वैसा बोलो।

पहले वाणी होनी चाहिए, फिर वर्तन चाहिए और फिर विनय चाहिए, तीनों मनोहर होने चाहिए। ज्ञानीपुरुष का वर्तन ऐसा होता है कि अपने मन को हरण कर ले। वाणी ऐसी होती है कि मन को हरण कर ले और विनय भी ऐसा कि मन को हरण कर ले। इतने बड़े ज्ञानीपद होने के बावजूद भी वे हमसे भी ज़्यादा विनय वे रखते हैं।

हमारी वाणी, वर्तन और विनय, ये तीनों चीज़ें मनोहर हैं, मन का हरण करें, ऐसे हैं और (आपको) कभी न कभी ऐसा होना चाहिए, ऐसा

बनना पड़ेगा। वह तो, जो वैसे बन चुके हैं उनके पीछे पड़ेंगे तो वैसा बना जा सकेगा या नहीं बना जा सकेगा?

प्रश्नकर्ता : बना जा सकेगा।

दादाश्री : बस! और कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है हमें। उनके पीछे पड़ना है। अनंत जन्मों का नुकसान एक जन्म में खत्म करना है। इसलिए हृदयपूर्वक संभाल तो रखनी पड़ेगी न?

जहाँ विनय, वहाँ यथार्थ धर्म

प्रश्नकर्ता : सामान्य रूप से तो बहुत अच्छी तरह से बात करने को ही हम विनय-विवेक कहते हैं लेकिन विनय का यथार्थ स्वरूप क्या है? हम बाहर व्यवहार में अच्छी तरह से बात करते हैं, लेकिन भीतर तो हमें उनके लिए कुछ न कुछ होता ही रहता है!

दादाश्री : विनय तो, जहाँ पर यथार्थ धर्म है वहाँ पर सब कुछ अर्पण करने जैसा हो जाना, समर्पित हो जाना, वह विनय है। बाकी बाहर का तो विवेक कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, बाहर तो आचार, बाह्याचार...

दादाश्री : वह तो विवेक कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, यानी अपना अहंकार पूरा खत्म हो जाए, उसे विनय कहते हैं?

दादाश्री : हाँ,

प्रश्नकर्ता : अपना अहंकार खत्म हो जाए, उस अवस्था को विनय कहते हैं या हर समय हमें जागृति रहे, उसे विनय कहते हैं?

दादाश्री : नहीं, जहाँ धर्म है, सत्य धर्म है, वहाँ पर खुद का अविनय बिल्कुल भी नहीं रहता, उसे विनय कहा जाता है। बिल्कुल विनय के अनुसार... वहाँ दखल नहीं करता, बाकी सब जगह दखल कर आता है।

प्रश्नकर्ता : यानी सत्य धर्म को स्वीकार करना, उसी को अविनय कहते हैं?

दादाश्री : इतना ही समझ लो कि मुझसे धर्म नहीं हुआ तो कोई हर्ज नहीं लेकिन जो धर्मिष्ठ हैं, वहाँ पर अविनय नहीं करना चाहिए। उसे विराधक नहीं कहेंगे। वह विराधना नहीं करता जबकि कुछ लोग तो विराधना करते हैं, उन्हें कुछ समझ ही नहीं है न!

विनय, वह है अहंकार रहित

प्रश्नकर्ता : विनय, वह अहंकार रहितता है या जागृति है ?

दादाश्री : नहीं! विनय, वह अहंकार रहितता है। विनय अर्थात् विराधना वगैरह नहीं करता। विराधक होता ही नहीं है वह। वह धर्म आए तब विराधना नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : वैसा संपूर्ण समर्पण तो बाद में ही आता है न? यह तो पहली ही सीढ़ी है न ?

दादाश्री : समर्पण नहीं, इसमें तो समर्पण-वमर्पण, कुछ भी नहीं। विराधना नहीं हो इसलिए वह संपूर्ण विनय रखता है। उसका निश्चय ही ऐसा है, मन के भाव ही ऐसे, विनय रखने के।

प्रश्नकर्ता : उतना उसका खुलापन है, खुद का छोड़ कर नया स्वीकार कर लेना, खुलेपन की जो स्थिति है, क्या उसे विनय कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, अर्थात् उसकी यह समझ पक्की है कि 'मेरा हित किसमें है और अहित किसमें?' उसकी वे दोनों समझ बहुत उच्च प्रकार की होती हैं जबकि जो कम डेवेलप होते हैं उन्हें, हितकारी क्या है और अहितकारी क्या, उसका भान ही नहीं रहता।

ज्ञान प्राप्त होता है परम विनय से

प्रश्नकर्ता : किसी को आपके जैसा ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसका वर्तन कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : माँ-बाप के साथ विनय होना चाहिए, उनकी आज्ञा में रहना चाहिए, और यहाँ पर परम विनय होना चाहिए।

चौबीस तीर्थंकर कहते आए हैं कि आत्मज्ञान के लिए निमित्त की ज़रूर है। 'ज्ञानी' कर्ता नहीं होते। मैं यदि कर्ता होऊँ, तो मुझे कर्म बँधेंगे और आप निमित्त मानो तो आपको पूरा-पूरा लाभ नहीं होगा। मुझे तो 'मैं निमित्त हूँ' ऐसा मानना है और आपको 'ज्ञानी द्वारा हुआ' ऐसा विनय रखना है!

वीतरागों का मार्ग है ही विनय का

वीतरागों का पूरा मार्ग ही विनय का मार्ग है। इस विनयधर्म की शुरुआत ही हिंदुस्तान में से होती है। हाथ जोड़ने की शुरुआत यहाँ से ही होती है, वह इससे लेकर ठेठ साष्टांग दंडवत् तक जाती है। विनयधर्म तो अपार है और परम विनय उत्पन्न हो जाए तब मोक्ष होता है।

एक सेठ ज्ञान प्राप्त करने आए थे। मैंने पूछा, 'क्या नाम है?' तो कहा, 'मैं सेठ, इसका प्रेसिडेन्ट।'(नाम पूछा तो मान व्यक्त किया) अरे, थोड़ा विनय तो रखो। जहाँ पर *पुद्गल* (जिसमें पूरण और गलन होता है) को खत्म करना है, वहाँ पर *पुद्गल* की पकड़ कैसी? *पुद्गल* का भार क्या रखना? जहाँ आत्मा प्राप्त करना है, वहाँ तो परम विनय चाहिए।

'रिलेटिव' धर्मों में भी जहाँ विनय है वहाँ मोक्षमार्ग है और विनय यदि टूटे नहीं तो मोक्ष ही है।

मनुष्यपन वह तो विवेक और विनय के अनुसार है। जितना विनय और विवेक कम उतनी कम मनुष्यता और उतनी ही अधिक पाशवता।

विनय तो बहुत बड़ा पद है। विनय हो तो मोक्ष में जा सकते हैं, नहीं तो मोक्ष में नहीं जा सकते। विनय के बगैर मोक्ष नहीं है। अन्य कुछ भी पढ़ने-करने की ज़रूरत नहीं है, पढ़ने वाले तो कितना ही पढ़-पढ़कर थक गए हैं। वीतरागों का मार्ग परम विनय माँगता है, उन्हें और कुछ भी नहीं चाहिए।

विनयी लोगों को देखने से आ जाता है विनय

विनय से मनुष्य की शोभा है। अभी उद्दंडता करने जाए कि 'मैं कलेक्टर हूँ और ऐसा वैसा ....' तो लोग उसे 'पागल है, घनचक्कर है' कहेंगे। यहाँ संसार में भी उद्दंडता नहीं करनी चाहिए। तब फिर ज्ञानीपुरुष तो सारे ब्रह्मांड के *ऊपरी* (बॉस) कहलाते हैं। वे उद्दंडता नहीं करते। वे तो बालक जैसे होते हैं। यहाँ तो कुछ बड़ा बना, कलेक्टर या ऑफिसर बना तो कितना सीना तान कर चलता है! उसे उद्दंडता कहते हैं।

विनय के बगैर तो मनुष्य, मनुष्य ही नहीं कहलाता। परम विनय तो अलग बात है लेकिन विनय होना चाहिए। अपनी प्रत्येक पुस्तक में ऐसा लिखा है, अगर उसकी कीमत समझ में आ जाए तो भी बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : विनय लाने के लिए प्रयत्न तो करना पड़ता है न, जानना तो पड़ता है न?

दादाश्री : प्रयत्न नहीं करना है, देखना ही है। यहाँ आकर आपको बैठे रहना है और विनयी लोगों का वर्तन देखते रहना है। देखने से विनय सीखते हैं। आसपास देखें कि कोई नहीं बोल रहा, तो हम में विनय आता है तो हमें नहीं बोलना चाहिए। यानी कि देखने से विनय आ जाता है। देखने से। सीखना नहीं होता, प्रयत्न नहीं करना पड़ता। (विनय वालों को देखने से ही) सिर्फ थोड़ा इम्प्रेशन (छाप) पड़ता है। यह विनय, परम

विनय सभी इम्प्रेशन हैं इसलिए अपने यहाँ नियम नहीं है, नो लॉ, लॉ।

समता नहीं छोड़े, वह परम विनय

प्रश्नकर्ता : विनय और परम विनय में क्या अंतर है?

दादाश्री : पूरी दुनिया में किसी भी जीव को दु:ख नहीं देना, वह विनय कहलाता है। जो दु:ख दे उसे भी दु:ख ना दें, वह विनय कहलाता है। और परम विनय अर्थात् पूरी दुनिया उसे दु:ख दे फिर भी वह समता नहीं छोड़े वह परम विनय। यदि ये दोनों आ जाएँ तो खुद ही भगवान बन गया। इन दोनों को ही सीखने की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी और थोड़ा स्पष्टीकरण कीजिए। उदाहरण देकर ज़रा फिर से समझाइए।

दादाश्री : किसी को गाली देना, वह 'नय' कहलाता है और कोई हमें गाली दे, तब हम उसे गाली नहीं देते, तो वह विनय कहलाता है। जब लोग हमें गाली दें, तब भी बिल्कुल समता रखना, वह परम विनय कहलाता है। गाली नहीं देने में विनय है, लेकिन उसमें मन में परिणाम बिगड़ जाते हैं और इसमें तो परिणाम भी नहीं बिगड़ते और समता रहती है, इसलिए फिर यह परम विनय कहलाता है, समतापूर्वक रहना, परम विनय कहलाता है। इसी से मोक्ष है।

प्रश्नकर्ता : समता भाव अर्थात्?

दादाश्री : समता भाव अर्थात् अपना मन शांति और समता में रहे। यदि मन अशांत हो जाए तो उस समय समता भाव नहीं है। अभी तुझे मन में जैसी शांति है न, उसमें भी वैसी शांति रहनी चाहिए।

नय-विनय-परम विनय

प्रश्नकर्ता : नय और विनय अलग-अलग चीज़ें नहीं है? नय-विनय का कोई संबंध नहीं है न?

दादाश्री : संबंध क्यों नहीं? नय से अधिक विनय है। विनय और परम विनय अर्थात् परम विशेष नय।

प्रश्नकर्ता : नय तो व्यवहार और निश्चय बताता है?

दादाश्री : वही नय जब विशेष नय हो जाता है तब वही विनय है। जहाँ नित्य होता है वहाँ विशेष नय को रखना और अनित्य को छोड़ देना।

हर एक व्यू पोइन्ट (दृष्टि बिंदु) को नय कहा जाता है। उसे एक खास व्यू पोइन्ट से देखना। नय के दो भाग हैं : एक तो व्यवहार के व्यू पोइन्ट से नय को देखा जा सकता है, तब *पुद्गल* दिखाई देता है और निश्चय, रियल व्यू पोइन्ट से आत्मा दिखाई देता है।

अब फिर नय में से हुआ विनय। इन दोनों भागों को सद्विवेकपूर्वक अलग रखता है विनय। अब अपने यहाँ पर व्यवहार में उपयोग किया जाने वाला विनय शब्द अलग है, वह अहंकारी विनय है जबकि यह विनय दोनों को (व्यवहार-निश्चय) अलग ही रखता है।

विनय यानी विशेष नय। इस जगत् के सभी नय संसार हेतु से हैं और विशेष नय मोक्ष में ले जाता है। विनय तो प्रज्ञा उत्पन्न होने के बाद ही आता है। सिर्फ विनय ही ऐसा है जो मोक्ष में ले जा सकता है।

परम विनय की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : परम विनय का विस्तृत अर्थ समझाइए।

दादाश्री : परम विनय अर्थात् संकुचित होकर रहना। किसी को अड़चन नहीं होने देना। भीतर अंतरात्मा में प्रफुल्लित रहना और बाहर संकुचित होकर रहना। हमसे किसी को थोड़ी सी भी तकलीफ (परेशानी) न हो। उन्हें तकलीफ हो तो वहाँ से हट जाना चाहिए। उनके लिए सुखदायी हो जाएँ लेकिन ज़रा सा भी बाधा रुप न हों पाए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो, जब आपमें इतनी योग्यता आ जाए, तभी उन्हें बाधारूप नहीं होंगे न?

दादाश्री : नहीं, इसमें हमें और क्या करना है? हमें सिर्फ विनय की ही ज़रूरत है, और कुछ नहीं। इसमें योग्यता-वोग्यता का सवाल ही कहाँ है? छोटे बच्चे भी समझ जाते हैं न कि कोई नहीं है इसलिए दादा उठकर जा रहे हैं, जय-जय करके, एडजेस्टेबल। दूसरों के साथ एडजस्ट होना नहीं आएगा तो चलेगा लेकिन यहाँ पर एडजस्ट हो जाना चाहिए।

परम विनयी, दुःख के सामने देते हैं प्रेम

परम विनय से मोक्ष है और इस संसार में तो परम विनय से बहुत सुखी हो जाओगे। सुखी होने का इस जैसा और कोई रास्ता ही नहीं है। परम विनय अर्थात् क्या? कि किसी को हमसे किंचित्मात्र भी दुःख न हो, वही परम विनय है अपना। इस काल में किसी को दुःख मत देना। कोई दुःख दे तो हमें जमा कर लेना है। फिर से वापस देने की इच्छा तो नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल भी नहीं।

दादाश्री : यों तो आप किसी को वापस दे ही दोगे। जब आपको कोई कुछ बोले तो वापस दे ही दोगे! क्योंकि, क्या पिछला स्वभाव चला गया है? जागृति रहती नहीं न! मैंने जो कहा है वह तो देने के बाद याद आता है, फिर आपको गलती का पछतावा करना पड़ता है।

विनय अर्थात् किसी को दुःख न हो, इस तरह से हम व्यवहार में रहें और परम विनय अर्थात कोई दुःख दे फिर भी उसके साथ प्रेम ही रखें। क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : दुःख दे फिर भी प्रेम करना।

दादाश्री : हाँ, वह परम विनय है। परम विनय से मोक्ष है। तब कोई प्रश्न करेगा कि दुःख देने पर भी प्रेम करेंगे तो लोग दुःख देते ही रहेंगे? नहीं। देना, वह लिमिटेड है, वह फिल्म बन चुकी है इसलिए घबराना नहीं। आपको सिर्फ डिसिज़न (निर्णय) लेने की ही ज़रूरत है और यदि आप कहो कि 'कोई किसी भी प्रकार का दुःख दे फिर भी मैं उसे स्वीकार कर लूँगा, तब भी कोई हर्ज नहीं है'। हिम्मत आपकी, सिर्फ कहने की हिम्मत चाहिए। नहीं तो मार खाकर तो भुगतना ही पड़ेगा न, तो क्यों न खुशी से भुगत लें? परम विनय में रहना चाहिए।

जो परम विनयी है, वही आबरूदार! अन्य कहीं आबरू है ही कहाँ? कलियुग में आबरू रहती होगी किसी की? परम विनय, वही आबरू है। लोगों में विनय ढूँढें और खुद अविनयी हो जाएँ तो क्या वह अपनी आबरू कहलाएगी?

परम विनय में नहीं निकालते भूल किसी की भी

यह जगत् 'रिलटिव' है, व्यवहारिक है। हम से सामने वाले को एक अक्षर भी नहीं कहा जा सकता और यदि 'परम विनय' में हों तो किसी की खामी (कमी) भी नहीं निकाल सकते। इस जगत् में किसी की खामी निकालने जैसा नहीं

है। खामी निकालने से क्या दोष लगेगा, खराबी निकालने वाले को उसका पता नहीं है।

किसी की भी टीका करने का मतलब, अपना दस रुपए का नोट भुनाकर एक रुपया लाना। टीका करने वाला हमेशा खुद का ही खोता है। जिससे कुछ भी नहीं मिलता। ऐसी मेहनत हमें नहीं करनी है। टीका से आपकी ही शक्तियाँ व्यर्थ होती हैं। हमें यदि दिखा कि यह तिल नहीं है, रेती ही है तो फिर उसे पीलने की मेहनत किसलिए करनी चाहिए? टाइम एन्ड एनर्जी (समय और शक्ति) दोनों 'वेस्ट' (बेकार) जाते हैं। यह तो टीका करके सामने वाले का मैल धो दिया और तेरा खुद का कपड़ा मैला किया! उसे अब कब धोएगा!

किसी के भी अवगुण नहीं देखने चाहिए। देखने ही हों, तो खुद के देखो न! यदि दूसरों की भूलें देखें, तो दिमाग़ कैसा हो जाता है। उसके बजाय यदि दूसरों के गुण देखें तो दिमाग़ कैसा खुश हो जाएगा!

परम अवगाढ़ विनय

परम विनय अर्थात् ग्रहण करते रहना। पूज्य लोगों का *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करना। फिर भले ही वे मारें-कूटें, लेकिन वहीं पर पड़े रहना! अविनय के सामने विनय करना, उसे गाढ़ विनय कहते हैं और यदि कोई अविनय से दो थप्पड़ मार दे, तब भी विनय रखना, उसे परम अवगाढ़ विनय कहते हैं। यह परम अवगाढ़ विनय जिसे प्राप्त हो गया, वह मोक्ष में जाता है। उसे सद्गुरु या किसी की भी ज़रूरत नहीं है। वह स्वयं बुद्ध बनेगा, उसकी मैं गारन्टी देता हूँ।

परम विनय में छुपी है अभेद दृष्टि

प्रश्नकर्ता : विनय और परम विनय में तात्विक क्या फर्क है?

दादाश्री : बहुत फर्क है। परम विनय तो (अज्ञान दशा में) मनुष्य में उत्पन्न ही नहीं होता। आत्मा प्राप्त करने के बाद ही परम विनय रहता है और उसके कारण जुदाई लगती ही नहीं। अभेद दृष्टि हो जाती है, अभेद बुद्धि हो जाती है, और जब तक विनय है तब तक मैं और गुरु महाराज दोनों अलग ही हैं। फिर भी वह विनय 'परम विनय' में ले जाता है। वह भी एक स्टेशन है।

जिसमें (परम विनय में) 'सिन्सियरिटी' और 'मॉरैलिटी' विशेष रूप से हो और हमारे साथ एकता रहे, जुदाई नहीं लगे, 'मैं और दादा एक ही हैं' ऐसा लगता रहे, वहाँ सभी शक्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। 'परम विनय' का अर्थ तो बहुत बड़ा होता है।

परम विनय अर्थात् जगत् को अभेद स्वरूप से देखना, तत्त्व दृष्टि से।

अहंकार रहित स्थिति ही है परम विनय

प्रश्नकर्ता : परम विनय अर्थात् संपूर्ण अहंकार रहित?

दादाश्री : अहंकार रहित स्थिति। ज्ञान का स्वभाव कैसा है कि ऊपर से नीचे आता है। अत: यदि परम विनय चूके तो वह ज्ञान को ही वापस कर देगा!

परम विनय लोगों को समझ में नहीं आ सकता। वह तो जब हम उसे सीधा करते हैं, रिपेयर करते हैं, (उसे ज्ञान देते हैं), उसके बाद ही उसमें परम विनय उत्पन्न होता है। यदि यहाँ विनय वाला आए तो फिर उसे सीधा करके परम विनय वाला पद देते हैं। उससे उसका मोक्ष होता है।

लघुत्तम भाव ही है परम विनय

प्रश्नकर्ता : यह अहंकार पिघले अर्थात् जो अपना अहंकार है अपना जो अहंकार है,

वह अहंकार ज़ीरो डिग्री पर आ जाए तो वह लघुत्तम है?

दादाश्री : हाँ, गुरुत्तम भाव अविनय है और लघुत्तम भाव परम विनय है।

पूर्ण होने के लिए लघुत्तम भाव जैसा और कोई भाव है ही नहीं और दुनिया में मुश्किल से मुश्किल भाव हो तो लघुत्तम भाव है। इस लघुत्तम भाव को जगत् किस तरह प्राप्त कर सकेगा? वर्ल्ड के एक भी व्यक्ति को लघुत्तम भाव की प्राप्ति नहीं हो सकती। जो लघुत्तम भाव आपको प्राप्त हुआ है, वैसा 'वर्ल्ड' में कोई भी मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता। वह आसान चीज़ नहीं है, बहुत मुश्किल चीज़ है यह। लोग कहते हैं, 'भाई, कैसे हो?' तब हमें कहना है, 'हार गए भाई, हार गए।' अब हम हार गए कहेंगे तो 'रियल' में गुरुत्तम हो गए अपने आप ही, कुदरती। यानी लघुत्तम बनने का भाव रहना चाहिए। वर्ना बड़ा हुआ कि भटका। बड़ा हुआ और बड़ा माना कि भटका। पूर्ण पुरुष बड़े बनने जाते ही नहीं। ये तो सारे अधूरे घड़े ही बड़े बनने जाते हैं। पूर्ण पुरुष नि:शब्द होते हैं।

ज्ञान के लिए ज़रूरत सिर्फ दो ही चीज़ों की

प्रश्नकर्ता : परम विनय होने में अहंकार आड़े आता है क्या?

दादाश्री : दो चीज़ों के आधार पर इस जगत् के मनुष्य जीते हैं : एक स्वरूप का आधार, दूसरा अहंकार का आधार।

अहंकार क्या मनवाता है कि मैं सब समझता हूँ और सब जानता हूँ, बस। उतना ही मनवाता है न, इसलिए जानने की बात रह जाती है। उसी अज्ञानता की वजह से यह है सब। कहीं पर यदि कुछ भी अड़चन आती है तो वह नासमझी की वजह से है। समझ से अड़चन चली जाती है। अब समझ नहीं है और अहंकार का स्वभाव ऐसा है कि जैसे-जैसे बड़ा होता है वैसे-वैसे वह सभी से कहता है कि 'मैं तो जानता हूँ, सब जानता हूँ।'

लोग मन में समझते हैं कि 'मैं कुछ जानता हूँ' अरे, हर्ज नहीं है। वह तेरा जीने का एक साधन है। वह साधन नहीं होगा तो तू मर जाएगा। 'हम कुछ जानते हैं, औरों से कुछ तो अच्छा है' ऐसा करके जीते हैं। उसमें हर्ज नहीं है लेकिन ज्ञानीपुरुष के पास तू ऐसा नहीं कह सकता।

हमारे पास दो ही चीज़ें लेकर आना। एक 'मैं कुछ जानता नहीं' और दूसरा 'परम विनय'। 'मैं कुछ जानता हूँ', यह तो कैफ है और यदि यथार्थ जान लिया हो, तब वह तो प्रकाश कहलाता है और जहाँ प्रकाश हो वहाँ ठोकर नहीं लगती। जबकि अभी तो जगह-जगह पर ठोकरें लगती हैं। उसे 'जान लिया' कैसे कहें? एक भी चिंता कम हुई? सही जाना होता, तो एक भी चिंता नहीं होनी चाहिए।

यदि, 'मैं कुछ जानता हूँ', ऐसा तेरा मानना है, तो फिर मैं तेरे अधूरे घड़े में क्या डालूँ? तेरा घड़ा यदि खाली हो तो मैं उसमें अमृत भर दूँ।

'मैं जानता हूँ' का भूत

यह तो, निरी ठोकरें लगते रहती हैं और यों ही 'जान गया, जान गया' किया करते हैं, तब उसमें हमें कब लाभ होगा? उसके बजाय कान खुले रखकर, विनय रखकर मुझे यह जानना ही है, मेरी कुछ इच्छा है, ऐसा रखेंगे तो काम होगा। 'मैं जान गया' कहेगा, तो फिर काम कैसे होगा? होगा क्या?

प्रश्नकर्ता : वह तो नहीं होगा।

दादाश्री : जाना कुछ नहीं और जानने का रोग घुस जाता है, वह बहुत बड़ा रोगी। जानने

का फल क्या? लट्टू से खेलना बंद होता है और आत्मा में ही रमता है। रोगी तो बस जानने का अहंकार ही करता है।

प्रश्नकर्ता : 'जानता हूँ,' वह तो अहम् कहलाता है न ? उसीसे भटके हैं न?

दादाश्री : 'मैं जानता हूँ,' वही बड़ा भूत है। 'यह मेरा है' वह बड़ा भूतावेश है।

[एक महाराज ने मुझसे पूछा, 'क्यों मुझे कुछ दिखाई नहीं देता है?' मैंने कहा, 'महाराज, कैफ चढ़ा है?' तब कहने लगे, ''उसका तो बहुत कैफ रहता है, 'मैं जानता हूँ' का।'' मैंने कहा, 'आत्मा को जान लिया तभी कहा जाएगा कि जान लिया, नहीं तो जानने का और क्या था? अर्थात् यह जो नहीं जानना है, उसका कैफ आप रखते हो।' 'मैं जानता हूँ,' लेकिन जो जानना है वह तो आप जानते ही नहीं। बिना बात की परेशानी मोल ली है!

फिर आचार्य महाराज से पूछा कि, 'वह कैफ किस तरह उतारोगे?' तब उन्होंने कहा, 'ये क्रियाएँ तो कर रहे हैं न!' तब मैंने कहा, 'जिन क्रियाओं से कैफ चढ़ता है वे सभी अज्ञान क्रियाएँ हैं, भगवान द्वारा बताई गई क्रियाएँ नहीं हैं। भगवान द्वारा बताई गई क्रियाएँ तो कैफ उतारती हैं, उनसे कैफ नहीं चढ़ता!'

परम विनय से खुलते हैं समझ के द्वार

भगवान क्या कहते हैं कि विनय का फल मोक्ष है, क्रियाओं का फल मोक्ष नहीं है। ये जो सारी क्रियाएँ की हैं, उनका (भौतिक) फल आएगा। जिस क्रिया का फल नहीं आता, वैसी क्रिया से मोक्ष है! परम विनय से मोक्ष है, उसके अलावा सब जंजाल है, और उसका अंत नहीं आता है। गुफा में तो गुफा का जंजाल और संसार में तो संसार का जंजाल, इस प्रकार जहाँ होगा, वहाँ का जंजाल आ घुसेगा।

धर्मस्थल में विनय करो, वह यों क्रिया ज़रूर दिखाई देती है, परंतु उस समय अंदर सूक्ष्म विनय है, वह मोक्षदाई है। वंदन करता है, उस घड़ी गालियाँ नहीं दे रहा होता है और 'यहाँ' का विनय तो अभ्युदय और आनुषंगिक दोनों फल देता है!

लोग कहते हैं कि क्रिया कीजिए, लेकिन बिना ज्ञान के क्रिया कैसी? क्रिया तो ज्ञान की दासी है। भगवान ने कहा ज्ञान क्रिया करो, 'ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्ष।' 'ज्ञान क्रिया' अर्थात् क्या? खुद के स्वरूप में ही रहना और जानना। दर्शन क्रिया में देखना और ज्ञानक्रिया में जानना। देखना और जानना, यही आत्मा की क्रिया है। जबकि आत्मा के अलावा अन्य किसी तत्त्व में ज्ञान-दर्शन-क्रिया नहीं होती। अन्य सभी क्रियाएँ होती हैं।

लाख अवतार तक क्रियाएँ करेगा तो भी कुछ नहीं मिलेगा। क्रियाएँ नहीं करनी हैं, 'परम विनय' में आना है। 'परम विनय' से ही मोक्ष है। 'परम विनय' से समझ के द्वार खुल जाते हैं। लेकिन अहंकार विलय होने पर ही 'परम विनय' उत्पन्न होता है।

जानने के कैफ से चढ़ते हैं आवरण

दादाश्री : 'मैं जानता हूँ' ऐसा मानने से आवरण चढ़ते हैं, जितने आवरण चढ़े उतना नुकसान... और फिर क्या नुकसान होता है? आवरण चढ़ते हैं वह एक ही नुकसान नहीं है, लेकिन जिज्ञासा वृत्ति भी टूटती है। खुद को जानना बाकी है फिर भी कहेगा, 'नहीं, मैं जानता हूँ।' अर्थात् एक तो जानने का कैफ आया तो आवरण चढ़ते हैं, और फिर नया जानने की जिज्ञासा टूट जाती है।

'मैं कुछ जानता हूँ' ऐसा ज़रा सा भी विचार आ जाए तो वापस अजागृति ला देता है।

अजागृति ला देता है, आवरण आने की वजह से।

अज्ञान का ज्ञान जानने में *पुद्गल* की शक्तियाँ खर्च होती हैं,

यह आपने जो जाना है न, वह अज्ञान का ज्ञान जाना। इस वकालत के बारे में आपने कुछ जाना तो है ही न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह जो अज्ञान था उसी का ज्ञान जाना।

दादाश्री : अज्ञान के ज्ञान को जाना उसमें सारी *पुद्गल* शक्ति खर्च हो गई।

प्रश्नकर्ता : और ज्ञान का ज्ञान जानने के लिए प्रार्थना करनी पड़ती है, इसका क्या मतलब है?

दादाश्री : प्रार्थना मतलब ज्ञानी से विशेष प्रकार की माँग करना।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए माँग करना।

दादाश्री : हाँ, यथार्थ स्वार्थ की माँग करने, को प्रार्थना कहते हैं। यथार्थ स्वार्थ की माँग करने को, सांसारिक स्वार्थ नहीं। यथार्थ स्व (खुद-आत्मा) और उसके लिए माँग करना, वह स्वार्थ की माँग हुई। वास्तव में वह स्वार्थ कहलाएगा। *पुद्गल* विरोधी होने के कारण वे शक्तियाँ माँगनी पड़ती हैं, तभी आगे बढ़ सकते हैं।

जितना विनय उतना ही काम होता है

मैंने एक नियम की खोज की है। मुझे शराबी लोग भी मिले हैं। उसने मुझसे कहा, 'दादाजी, मैं तो नालायक हूँ, मैं तो शराब पीता हूँ। मुझे मार्गदर्शन देंगे?' मैंने कहा, 'तुझे तो पहले देना पड़ेगा क्योंकि तू खुद अपने आप को नालायक कह रहा है, इसलिए पहले तेरा कल्याण होगा।' उसमें बहुत बड़ा विनय गुण होता है और जिन्हें इन शास्त्रों को पढ़ने से कैफ चढ़ गया, उनमें विनय कम होता है। उनका काम, कम होता है।

ज्ञानी की कृपा से बदलती है दृष्टि

प्रश्नकर्ता : दादा, वे यदि ऐसा स्वीकार लें कि मैं तो कोरा कागज़ हूँ, क्लीन स्लेट हूँ।

दादाश्री : स्वीकार लें तो बहुत अच्छा है, अक़्लमंदी की बात है।

प्रश्नकर्ता : फिर तो उनकी दृष्टि भी बदल जाएगी?

दादाश्री : ज़रूर बदलेगी लेकिन दृष्टि को बदलवाने वाले होने चाहिए। अपने आप दृष्टि नहीं बदल सकेंगे। अनादि से यह व्यवहार चलता आया है कि दृष्टि बदलवाने वाले होने चाहिए। दृष्टि बदले, तभी से आपकी सृष्टि बदली हुई लगती है, इसी को दृष्टि बदलना कहा जाता है। यदि सृष्टि नहीं बदले तो दृष्टि बदली हुई कहलाएगी ही कैसे? नहीं तो जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि आकर रहती है।

प्रश्नकर्ता : यानी मुख्यतः अंतर्मुख दृष्टि होनी चाहिए?

दादाश्री : ऐसा है न, कितने ही लोग तो अंदर देखते रहते हैं। अरे, अंदर तो कुछ भी नहीं है। अंदर तो 'ज्ञानीपुरुष' के दिखाने के बाद ही दिखाई देता है, वर्ना अंदर तो ऐसे आँख मींचकर स्त्रियाँ वगैरह दिखती हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी अंतर्मुख होने के लिए किसी सहारे की ज़रूरत पड़ती है?

दादाश्री : वह तो कृपा हो, तब अंतर्मुख हुआ जाता है। कृपा के बिना अंतर्मुख किस तरह

से हो सकेगा? वर्ना लोगों को अंदर कारखाने दिखते हैं, और कितनी ही कल्पनाएँ दिखती हैं।

ऐसे उतरती है कृपा

प्रश्नकर्ता : वह कृपा कब होती है?

दादाश्री : कृपा तो 'ज्ञानीपुरुष' के दर्शन करे, उनका विनय करे, उनकी आज्ञा में रहे, तब कृपा मिलती है। बाकी वह कृपा क्या यों ही मिलती होगी? कृपा यों ही नहीं उतरती। वह कहीं पैसे से उतरती है या रोज़ सेवा करने से उतरती है? ऐसा कुछ नहीं है। कहीं पर कुछ परम विनय देखें, किसी जगह पर, तो कृपा उतर जाती है!

कृपा का मतलब 'एवरी टाइम सिन्सियर'। नैमित्तिक कृपा पात्र हुए बगैर 'निश्चय' प्राप्त नहीं हो सकता। क्रमिकमार्ग में भी नैमित्तिक कृपा है ही। 'हम' तो स्पेशल कृपा बरसाते हैं। परम विनय से 'हमारी' कृपा उतरती है। सिर्फ 'कम्प्लीट सिन्सियरिटी' की ही ज़रूरत है।

ज्ञानी का राजीपा मिलता है परम विनय से

प्रश्नकर्ता : तो फिर आप ज्ञान देते है वह कृपा का स्वरूप माना जाएगा?

दादाश्री : कृपा से ही काम होगा। भीतर जो प्रकट हो गए है उन 'दादा भगवान' की कृपा ही सीधी उतर जाती है। उससे काम ले लेना है। हर किसी के पात्र के अनुसार कृपा उतरती है, फिर जितना विनय वाला उतनी कृपा अधिक। सब से बड़ा गुण इस जगत् में कोई हो तो वह विनय गुण!

ये दिखते हैं वे भादरण के पटेल हैं और भीतर 'दादा भगवान' बैठे हैं! यहाँ व्यक्त हो चुके हैं और आपमें अव्यक्त रूप से रहे हुए हैं। उन व्यक्त के साथ विनयपूर्वक बैठने से आपके भी व्यक्त होते जाएँगे। यह परम विनय का मार्ग है। यहाँ पैसों की ज़रूरत नहीं है। यहाँ सेवा की भी ज़रूरत नहीं है। यहाँ किसी चीज़ की भी ज़रूरत नहीं है। यहाँ द्रव्यपूजा नहीं होती, यह तो मोक्ष का मार्ग है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपका *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करने के लिए हमें किस प्रकार पात्रता प्राप्त करनी चाहिए?

दादाश्री : *राजीपा* प्राप्त करने के लिए तो 'परम विनय' की ही ज़रूरत है। दूसरी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। 'परम विनय' से ही *राजीपा* मिलता है। ऐसा कुछ है ही नहीं कि पैर दबाने से *राजीपा* मिलता है। मुझे गाड़ियों में घुमाओ तो भी *राजीपा* नहीं मिलेगा। 'परम विनय' से ही मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : पात्रता या अधिकार के बिना यह 'ज्ञान' किस तरह पचेगा?

दादाश्री : पात्रता या अधिकार की यहाँ पर ज़रूरत ही नहीं है। इस काल में किसी का अधिकार देखने जैसा ही नहीं है। इस काल में किसी को अधिकार है ही नहीं। इसलिए हम तो चाहे जो आए उसके लिए खोल दिया है। यह काल कौन-सा है जानते हो? जैन 'दूषमकाल' कहते है और वेदांती 'कलियुग' कहते हैं? कलियुग अर्थात् क्या? कभी भी चैन नहीं पड़े, वह। 'कल क्या होगा? कल का क्या होगा?' इस तरह चैन नहीं पड़ता। दूषमकाल मतलब क्या? अति दु:ख उठाकर भी समता नहीं रहती। अब ऐसे काल में अधिकार देखने जाएँ तो किसका नंबर लगेगा? अधिकारी हैं ही नहीं!

दृष्टि बदले विनय गुण से

मुझे आपकी किसी भी चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं है, आपको सिर्फ इतना कहना हैं कि 'आपकी दृष्टि से मेरी दृष्टि मिला दीजिए'।

फिर मैं हाथ रखकर आपका सब कुछ कर दूँगा। भगवान, चौबीस तीर्थंकरों की कृपा उतर जाएगी आप पर! मैं तो ऐजेन्ट हूँ, बीच में दलाल हूँ। 'ब्रोकर' क्या नहीं कर सकता? इसलिए तुरंत ही एक घंटे में इसका हल! घंटेभर में ही दृष्टि एक हो जाती है क्योंकि चौबीस तीर्थंकरों का वरदान है कि 'यदि तू ज्ञानीपुरुष के पास गया तो तुझे कुछ भी करना बाकी नहीं रहेगा। वर्ना करता ही रह, तुझे जो अनुकूल आए वह कर।' सिर्फ दृष्टि बदलने की ही ज़रूरत है। हमें उनसे कहना चाहिए कि 'साहब, मेरी दृष्टि में बदल दीजिए।' बस, इतना ही कहने की, माँगने की ज़रूरत है। 'माँगे बगैर तो माँ भी नहीं परोसती,' ऐसा दुनिया का नियम है।

प्रश्नकर्ता : माँगने की वृत्ति भी क्या तभी होती है जब बहुत पुण्य हो?

दादाश्री : हाँ, बहुत पुण्य हो तभी होती है और आपकी माँगने की वृत्ति नहीं है लेकिन आप आते हो, तब हम समझ जाते हैं कि आपकी माँगने की वृत्ति है। हम इस तरह से कुछ मंगवाना नहीं चाहते कि आपको कहना पड़े कि 'साहब मुझे दीजिए!' हम तो आपका विनय देख लेते हैं, यानी आपने सब माँग लिया! विनय और परम विनय होना चाहिए।

ज्ञान परिणामित होने में आवश्यकता परम विनय की

प्रश्नकर्ता : ये सत्पुरुष तो सभी को एक समान बरसात देते हैं लेकिन यदि मेरा नीम हो और दूसरे का आम हो तो बीज में फर्क पड़ जाएगा न? फिर एक-सा परिणाम किस तरह प्राप्त करेंगे?

दादाश्री : अपने यहाँ तो बीज की कोई परेशानी नहीं है। यहाँ पर तो आपको विनयपूर्वक मुझ से कहना है कि 'साहब, मेरा कल्याण कीजिए।' यहाँ पर परम विनय से मोक्ष है।

यह पाँचवे *आरे* का पौद्गलिक सड़न है, यह कभी भी 'रिपेयर' नहीं होगा। यहाँ से रिपेयर करो तो वहाँ से टूटेगा और वहाँ से 'रिपेयर' करो तो यहाँ से टूटेगा। इसके बदले तो 'अक्रम विज्ञान' अंदर से शुद्ध कर देता है और आपको अलग रखता है!

ज्ञान ही उत्पन्न करता है परम विनय

पूरा जगत् बाह्याचार पर बैठा है। बाह्याचार, वह 'इफेक्ट' हैं, 'कॉज़ेज़' नहीं है। 'कॉज़ेज़' हम खत्म कर देते हैं फिर 'इफेक्ट' तो अपने आप धुल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : परम विनय वह आचार है क्या?

दादाश्री : परम विनय तो अपने आप उत्पन्न होता है। यह ''ज्ञान'' ही उत्पन्न करता है। जैसे कि बच्चे को समझाया जाए कि यह शीशी 'पोइज़न' की है, और 'पोइज़न' मतलब क्या, ऐसा समझाने के बाद वह उसे छूता नहीं है। उसी प्रकार यह 'ज्ञान' अविनय छुड़वाता है, और परम विनय उत्पन्न करवाता है। आपको परम विनय में नहीं रहना है, परंतु...

प्रश्नकर्ता : अपने आप ही रहा जाता है।

दादाश्री : हाँ, अपने आप ही परम विनय में रहा जाता है।

आज्ञा में रहना ही परम विनय

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्ति के बाद महात्माओं की प्रगति की स्पीड किस पर आधारित है? क्या करने पर तेज़ी से प्रगति होगी?

दादाश्री : पाँच आज्ञा पालन करने पर सब तेज़ी से होगा और पाँच आज्ञा ही उसका कारण

है। पाँच आज्ञा पालन करने से आवरण टूटते जाते हैं और शक्तियाँ प्रकट होती जाती हैं। अव्यक्त शक्तियाँ व्यक्त होती जाती हैं। पाँच आज्ञा के पालन से ऐश्वर्य व्यक्त होता है। तरह-तरह की शक्तियाँ प्रकट होती हैं। आज्ञापालन पर आधारित है। हमारी आज्ञा के प्रति सिन्सियर रहना, वह तो सब से बड़ा, मुख्य गुण कहलाता है।

जो हमारी आज्ञा में विशेष रूप से रहते हैं, उन्हें अच्छा परिणाम मिलता है। उन्हें हमारा *राजीपा* प्राप्त हो जाता है। आप जैसे-जैसे हमारी आज्ञा में रहकर आगे बढ़ते जाओगे, वैसे-वैसे आप पर हमारा राजीपन बढ़ता जाएगा।

'निरंतर पाँच आज्ञा में रहना है' यह भाव, इतना ही अंदर रहना चाहिए। अन्य कोई कृपा कहीं से नहीं आऐगी। पैर दबाने वाले पर कृपा ज़्यादा उतरे और नहीं दबाने वाले पर कम उतरे, ऐसा कुछ नहीं है। वह 'भाव' और 'परम विनय', इतना ही हमें समझना है।

निरंतर आत्मभाव वही परम विनय

प्रश्नकर्ता : तो अब महात्माओं को परम विनय में किस तरह से रहना चाहिए ? हमें उसकी प्रैक्टिस किस तरह से करनी चाहिए?

दादाश्री : अपने सभी महात्मा जो हैं, वे (निश्चय से) विनय में हैं और हम परम विनय में हैं?

प्रश्नकर्ता : तो फिर महात्माओं में परम विनय के भाव किस प्रकार से आएँगे?

दादाश्री : निरंतर आत्मा में रहना, वही परम विनय है। फिर जितना हो सके, ऐसा करते-करते विनय। विनय में आ जाएँगे मोक्ष तो होगा। विनय में से परम विनय में जाएँ तो संपूर्ण मोक्ष।

यह बाहर का विनय, वह विनय नहीं है। यह अपना विनय, जबकि बाहर का विनय, विवेक कहलाता है, विवेक अच्छे-बुरे का। यह हितकारी और यह अहितकारी, वह विवेक कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर विनय का मतलब क्या है?

दादाश्री : अपना यह ज्ञान प्राप्त करे और वह ऐसा नहीं कहे कि 'मैं (चंदू) ही हूँ,' यदि ऐसा नहीं कहे तब विनय हुआ।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् उपयोग में रहना विनय है?

दादाश्री : 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ' वह विनय हुआ और 'मैं चंदू भाई ही हूँ' वह विनय नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसमें भी 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा तो मानते ही हैं न हम?

दादाश्री : वह जो भ्रांति थी कि 'मैं (चंदू) हूँ' वह टूटी और जब से 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' वह आया तब से विनय मंदिर में आया। वहाँ से परम विनय में जाता है। उसके बाद मुक्ति। हमारा यह पद परम विनय वाला कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए हम ऐसा कहते हैं न आप्तवाणी में, कि परम विनय, वह भाव। तो हमारे विनय में रहते हुए भी, हमारा भाव परम विनय में ही परिणामित होगा?

दादाश्री : वैसा ही है, भाव परम विनय में ही है लेकिन भाव जब परिणामित होंगे और परम विनय होगा, तब भाव केवलज्ञान में रहेगा। अत: मुक्त दशा में भाव आगे-आगे चलते रहते हैं और परिणाम पीछे-पीछे चलता है।

जितना डेवेलपमेन्ट उतना विनय

प्रश्नकर्ता : क्या विनय, वह प्रथम, प्राथमिक

ऐन्ट्रन्स (दरवाज़ा) है? ज्ञानी के पास आने के लिए और ज्ञान प्राप्ति की प्रथम पूर्व भूमिका है?

दादाश्री : विनय से ही! पूरी भूमिका विनय से ही है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् विनय से ही शुरु होती है।

दादाश्री : विनय से ही यह भूमिका प्राप्त होती है। अपना यह अक्रम मार्ग है न इसलिए उसमें हर कोई घुस गया। यहाँ पर तो कहते हैं कि 'आप आओ, यदि आपके पुण्य होंगे तो मुझे मिलोगे।' इसलिए इसमें विनय वाले और अविनय वाले सभी घुस गए हैं।

प्रश्नकर्ता : इन सभी लोगों के यहाँ आने के बाद में हम सब में विनय आएगा या नहीं?

दादाश्री : वह काम हो गया न! फिर आ गया न विनय! विनय आ जाएगा लेकिन उसमें डेवेलप नहीं हुआ है इसलिए (विनय रहित व्यक्ति) की जगमगाहट नहीं होती फिर, उजाला नहीं लगता जबकि इनका (विनय वाले का) तो जगमगा उठता है। जितना-जितना डेवेलपमेन्ट होगा न, उस अनुसार विनय रहेगा।

प्रश्नकर्ता : तो विनय का भी विकास होता है?

दादाश्री : विनय की वजह से ही तो यह डेवेलपमेन्ट कहलाया। विनय मनुष्य के विकास का क्रम कहलाता है। सिर्फ विनय के थर्मामीटर से ही इसे नापा जा सकता है।

अविनय और विनय की भेदरेखा

प्रश्नकर्ता : आत्मा का विनय प्रकट नहीं होता और यदि प्रकट हो जाए तो टिकता नहीं है।

दादाश्री : आप विनय किसे कहते हो? आप अपनी किस भाषा में विनय को समझते हो?

प्रश्नकर्ता : आत्मा का विनय, जो मोक्षमार्ग में ले जाता है।

दादाश्री : आत्मा का विनय करने की तो ज़रूरत ही नहीं है न! यह विनय तो, आपके पहले के ज्ञान के आधार पर जो भरा हुआ है न, वह विनय डिस्चार्ज में निकलता रहेगा। हमें भाव रखना है। 'चंदूभाई विनय में रहो, ठीक से विनय में रहो,' बस इतना ही कहना है। और अविनय किसे कहते हैं? विनय तो, अविनय में नहीं आए न, वह सारा विनय ही है। फिर विनय में, ऐसे-ऐसे करना, साहब! ऐसे-ऐसे करना (नमस्कार करना, पैर छूना) उसे विनय नहीं कहते। वह तो धर्मस्थलों में बहुत होता ही रहता है न! कहाँ नहीं करते? ज़रा भी अविनय न हो, अपराध न हो, अविनय न हो, वह विनय। किसी को किंचित्मात्र दु:ख न हो, वह विनय। फिर अन्य कौन सा विनय चाहिए हमें? वे सारे तो लौकिक विनय हैं, ऐसे-ऐसे करते हैं! 'साहब' ....ऐसे वंदन और वैसे वंदन करते हैं, वे सभी लौकिक विनय हैं। वे तो संसार में पुण्य के दोने बाँधने वाले विनय हैं। आपको क्या वैसे विनय सीखने हैं अभी भी?

प्रश्नकर्ता : वैसा तो करोड़ों सालों से चल रहा है।

दादाश्री : अनंत जन्मों से चल ही रहा है न! अब विनय कैसा होना चाहिए हमारा? 'अविनय किंचित्मात्र भी न हो,' ऐसा भाव मज़बूत रखना और दूसरा क्या कि ज्ञानी का अविनय तो कोई करता ही नहीं अर्थात् ज्ञानी के फॉलोंअर्स, उनके साथ बैठने वालों का भी अविनय नहीं होना चाहिए। वे सभी ज्ञानी ही हैं। ज्ञानी अभेद स्वरूप हैं, इसलिए सभी एक ही स्वरूप हैं। यदि कोई अविनय करता है तो वह उसकी भूल है, उसकी जवाबदेही है। उसकी जवाबदेही। हमें जवाबदेही नहीं लेनी है। अविनय नहीं होना चाहिए। वह गुण तो आपमें

शुरू से ही है, आपमें तो वह गुण जन्म से ही है। आपको सीखना ही नहीं पड़ेगा। वह नहीं आता, ऐसे-ऐसे। वंदन की तो अपने यहाँ ज़रूरत ही नहीं है। वहाँ झंझट है! धर्मस्थलों में सभी झंझट हैं और यहाँ कोई झंझट नहीं! वह सब लौकिक है। यहाँ पर लौकिक की किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। यहाँ तो सभी अलौकिक चीज़ें हैं और नियम नहीं है। आप जल्दी आओ, देर से आओ, कहीं भी बैठो, वहाँ ऊपर बैठो, ऐसे बैठो, वैसे बैठो, कुछ भी नहीं। अपने यहाँ तो आराम से बैठो सभी। आपको जैसे अच्छा लगे वैसे बैठो। यहाँ सहज होना है।

जहाँ नियम हैं, वहाँ परम विनय नहीं हो सकता

लोग तो आकर कहते हैं, 'दादा, यह नियम रखो।' मैंने कहा, 'भाई, एक नियम रखूँगा, तो फिर दूसरा नियम रखना पड़ेगा। ऐसे फिर तीसरा नियम रखना पड़ेगा, चौथा नियम रखना पड़ेगा।' यह तो मेरे अनंत जन्मों के अनुभव की खोज है। अनुभव के आधार पर ही यह खोज हुई है। वर्ल्ड में ऐसा कोई संघ नहीं होगा।

यदि एक लाख लोग इकट्ठे हो जाएँ तो भी यहाँ पर नो लॉ है। मतलब कोई नियम नहीं। नियम रहित साम्राज्य कैसा होगा! हमारे यहाँ तो बिल्कुल भी आवाज़ नहीं होती, हमारे यहाँ यदि दस हज़ार लोग बैठे हों खाना खाने तो भी बिल्कुल भी आवाज़ नहीं होती। यहाँ पर किसी भी प्रकार की पोल नहीं चलती।

दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन ।) (दिव्य सोल्यूशन की यह नक़द बैंक है ।) जहाँ वाद-विवाद नहीं होते, दखल नहीं होता, जहाँ नियम नहीं हैं। नियम हो वहाँ पर परम विनय नहीं रख पाएगा और हमें नियम के बंधन में रहना पड़ेगा। हम तो, 'व्यवस्थित' जो करे, उसे देखने वाले हैं। और कुछ हमें कहाँ पुसाता है?

विनय से मोक्षमार्ग, परम विनय से मोक्ष

अपने यहाँ सत्संग में इतने लोग आते हैं, लेकिन यहाँ पर 'परम विनय' की वजह से बिना नियम के सब चलता है। 'परम विनय' है, इसलिए नियम की ज़रूरत नहीं पड़ी।

इतने सारे लोगों में (नियम) लॉ क्या है? नो लॉ लॉ! (नियम नहीं है वही नियम!) कोई ऐसे बैठा, कोई वैसे बैठा, कोई इधर बैठा लेकिन एक ही वाक्य, 'परम विनय!' ये सभी लोग (महात्मा गण) परम विनय में रहते हैं। विनय से मोक्षमार्ग मिलता है और परम विनय से मोक्ष मिलता है। इसीलिए यहाँ पर परम विनय, इन लोगों के लिए सब से पहले परम विनय है! उसमें जितना रहा उतना, वर्ना यदि परम विनय नहीं रहे तो विनय तो होता ही है।

यह तो 'साइन्टिफिक' विज्ञान है। कुछ लोग तो मुझ से कहते हैं, 'नियम बनाइए, ऐसा कीजिए, वैसा कीजिए।' अरे, किस तरह के इंसान हो? आपको ऐसा विज्ञान मिला फिर भी अक्ल नहीं आई? कैसा विज्ञान! बिल्कुल भी टकराव नहीं हो, ऐसा।

प्रश्नकर्ता : अभी तक नियम बनाकर ही लोगों को सीधा करने का रास्ता था।

दादाश्री : हाँ, लोगों के लिए ठीक है लेकिन हमें तो मोक्षमार्ग पर जाना है। लोगों को तो संसार में भटकना है, उन्हें नियम की ज़रूरत है। बाकी, नियम से तो टकराव होता है और टकराव से वापस संसार खड़ा हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : क्या मोक्षमार्ग पर जाने के भी नियम बताए गए हैं?

दादाश्री : मोक्षमार्ग पर जाने के नियम नहीं

होते। यहाँ तो नियम वगैरह कुछ भी नहीं है, सहज रूप से! सहज रूप से जो हुआ वही ठीक है।

सर्वांश परम विनय की परिभाषा

दादाश्री : यह परम विनय का मार्ग है। परम विनय क्या है? किंचित्मात्र भी आपत्ति न उठाए, बल्कि आपके लिए यहाँ पर बैठने की जगह बना दे। खुद खड़ा होकर दूसरों को जगह दे दे। मन में भी किसी के लिए खराब विचार नहीं। किसी की कोहनी लग जाए तब भी उसके लिए खराब विचार नहीं। मन बिगड़ा हुआ नहीं हो, वाणी बिगड़ी हुई नहीं हो और वर्तन भी बिगड़ा हुआ नहीं हो, वह परम विनय है। इतना तो फिट करना ही पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा! तो फिर अपने महात्माओं में उनका मन तो सुधरा हुआ होता है, वाणी कुछ सुधरी हुई होती है और जो वर्तन है उसे डिस्चार्ज मानते हैं, वह सुधरा हुआ नहीं होता, तो वह परम विनय नहीं कहलाता?

दादाश्री : नहीं कहलाता। परम विनय तो अंतिम जन्म में, अंतिम दशा में आएगा। अभी हमें परम विनय का भाव रखना है। जितने अंश तक हुआ उतना ठीक लेकिन सर्वांश नहीं। परम विनय की शुरुआत हो गई है लेकिन जितने अंशों तक हो सके उतना, सर्वांश नहीं कहलाता।

अर्थात् जितने आप परम विनयी हो उतना ही आपका बोझा कम होगा। उतनी ही वाणी सुधरी हुई होगी, उतना ही मन भी सुधरा हुआ होगा और वर्तन भी सुधरा हुआ होगा।

प्रश्नकर्ता : यह मन में सफाई, वचन में सफाई और वर्तन में सफाई, वह सब हो तभी परम विनय है। यह 'सफाई' मतलब क्या? बिगड़ा हुआ भाग नहीं रहता?

दादाश्री : मन बिगड़ा हुआ नहीं होता और बिगड़ा हुआ अर्थात् क्या? जिस मन में किसी को दुःख देने के विचार नहीं आएँ, किसी को परेशान करने के विचार नहीं आएँ, जो क्लियर (साफ) हो।

प्रश्नकर्ता : और उसकी वाणी भी वैसी ही निकलती है।

दादाश्री : हाँ, वाणी भी वैसी ही निकलती है।

प्रश्नकर्ता : और उसका वर्तन भी ऐसा होता है कि किसी को ज़रा भी दुःख नहीं होता।

दादाश्री : हाँ, दुःख नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : वह परम विनय?

दादाश्री : हाँ।

ये 'दादा' बहुत पक्के इंसान हैं। नहीं तो क्या इतना बड़ा संघ चला लेते? चला सकते थे?! नहीं तो रोज़ लड़ाई-झगड़े होते लेकिन यह तो बगैर नियम के, नियम रहित। देखो न! 'नो लॉ-लॉ!' फिर भी चल ही रहा है न! वह विनय में, यदि परम विनय में रहे तो वहाँ पर दादा खुश!

विनय चूकने पर होती है अशातना

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा डर लगता है कि हमसे ज्ञानीपुरुष की कहीं अशातना न हो जाए?

दादाश्री : ज्ञानीपुरुष की ज़रा-सी भी अशातना होने से बहुत भयंकर दोष बंध जाते हैं और ज्ञानावरण (कर्म) बंधता है, उतना ही नहीं लेकिन ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय सभी कर्म बंध जाते हैं।

लेकिन अभी तो लोग अशातना शब्द ही नहीं समझते। बोलते ज़रूर हैं अशातना लेकिन उसका भावार्थ क्या है वह समझ में नहीं आता न!

प्रश्नकर्ता : अशातना हुई, ऐसा कब कहलाता है?

दादाश्री : विनय चूका कि अशातना हुई। इसलिए हम पुस्तक में अशातना शब्द नहीं लिखते न! हम क्या कहते हैं कि 'परम विनय रखो।' हम ऐसे कान नहीं पकड़वाते। 'अशातना नहीं करना' ऐसा भी हम नहीं कहते। लेकिन कहते हैं, 'परम विनय रखो।' परम विनय वही मोक्ष का साधन है। 'परम विनय' में अशातना कभी होती ही नहीं है।

अविनय, अशातना और अपराध, ये तीन चीज़ें ही हर किसी के लिए अंतराय रूपी हो जाती हैं और परम विनय से इन तीनों चीज़ों का नाश हो जाता है।

अंतर, अविनय और विराधना में

प्रश्नकर्ता : यह आपसे प्रश्न पूछने में कहीं पर अविनय हो जाता है। अंतर में ऐसा अविनय करने का कोई भाव नहीं होता, फिर भी बोलने-करने में अविनय हो जाए तो वह हम विराधना तो नहीं करते हैं न?

दादाश्री : बात करते हुए आप विराधक हो जाओ तो हम बात बंद कर देते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यह बात तो उल्टे रास्ते चली।

प्रश्नकर्ता : परंतु हमसे आपकी विराधना हो जाए तो?

दादाश्री : हमारी विराधना करने के आपमें परमाणु ही नहीं हैं। ऐसी तो हमें शंका ही उत्पन्न नहीं होती। पूरे दिन जिनकी आराधना करते हो, उनकी विराधना हो ही नहीं सकती न! 'दादा' की आराधना की, वही 'शुद्धात्मा' की आराधना करने के बराबर है और वही परमात्मा की आराधना है और वही मोक्ष का कारण है।

प्रश्नकर्ता : अविनय और विराधना के बारे में ज़रा ज़्यादा समझाइए न!

दादाश्री : अविनय विराधना नहीं कहलाती। अविनय तो निम्न स्टेज है और विराधना में तो, वास्तव में उनके विरुद्ध चला जाता है। अविनय यानी मुझे कुछ लेना-देना नहीं है, ऐसा। 'विनय' नहीं करे, उसी को कहते हैं अविनय। विनय तो शायद लोग न भी करे, पूरा संसार भी नहीं करता।

'ज्ञानीपुरुष' आपके अविनय की *नोंध* (नोट करना) नहीं करते हैं। आपको समझ लेना है कि मुझे कैसा विनय करना है और कैसा नहीं? और आपकी भूल हो सकती है, ऐसा हम जानते हैं और इस दूषमकाल में अविनय की तो *नोंध* ही नहीं कर सकते न? चौथे *आरे* (काल चक्र का बारहवा हिस्सा) में अविनय की *नोंध* करनी पड़ती है। अभी तो 'लेट गो' करना पड़ता है बल्कि, अविनय करे उसे आशीर्वाद देना पड़ता है!

प्रश्नकर्ता : यदि अविनय का पता नहीं चले, तो वह रुकावट डालता है क्या?

दादाश्री : हाँ, रुकावट डाले बिना तो रहेगा ही नहीं न।

प्रश्नकर्ता : लेकिन, अब उसमें से छूटें कैसे, दादा? उसका तो पता ही नहीं चलता?

दादाश्री : अविनय का पता न चले फिर भी वह रुकावट डाले बगैर नहीं रहेगा और विनय का पता न चले वह भी रुकावट डाले बगैर नहीं रहेगा। विनय भी रुकावट डालता है।

प्रश्नकर्ता : विनय रुकावट डालता है, दादा?

दादाश्री : रुकावट डालता है यानी आनंद होता हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है। विनय का फल विनय आता है, अविनय का....

दादाश्री : फल तो देता ही है न! पता नहीं चले इसका मतलब क्या कुछ कम हो जाता है? पता नहीं चला और हाथ अंगारों पर पड़े तो क्या अंगारे फल दिए बगैर रहेंगे? यदि हम कहें कि मुझे पता नहीं था, तो अग्नि क्या कहेगी?

प्रश्नकर्ता : मैं नहीं जानती, मेरा जो स्वभाव है वह तो फल देगा ही।

दादाश्री : तुरंत फल देता है।

प्रश्नकर्ता : वह विनय कैसे सीखेंगे? कौन सिखाएगा ?

दादाश्री : सिखाने की ज़रूरत ही कहाँ रही? आत्मा में सभी शक्तियाँ हैं, जो आत्मा आपको दिया है उसमें सभी शक्तियाँ हैं (उनमें)।

विनय तो मोक्षमार्ग में मुख्य चीज़ है। हमारे पास अविनय करो उसमें हमें हर्ज नहीं है, परंतु आप अपने खुद पर अंतराय डाल रहे हो, आप हमें गालियाँ देते हो, वह आप खुद अपने को ही नुकसान कर रहे हो। यहाँ तो बहुत विनय चाहिए, परम विनय चाहिए! यहाँ एक अक्षर भी उल्टा-सीधा नहीं बोलना चाहिए। अभी यदि मामलतदार के पास गए हों तो उस घड़ी चुप होकर बैठे रहेंगे, वहाँ कैसे एक अक्षर भी नहीं बोलते! और ये तो 'ज्ञानीपुरुष'! उनके पास तो बोलते होंगे? 'ज्ञानीपुरुष' तो देहधारी परमात्मा कहलाते हैं!!! (ऐसे) 'ज्ञानीपुरुष' के लिए एक भी उल्टा विचार नहीं आना चाहिए।

समझ लो परम विनय का अर्थ

यहाँ पर तो बहुत समझदारी से रहना है। परम विनय शब्द कहा है, उसका अर्थ इतना समझ जाना है कि बिना बात के कुछ भी नहीं कहना है। काम का हो तो कहना। खुद का सयानापन या खुद की अक्ल यहाँ पर नहीं दिखानी है। आपकी सारी अक्ल नकल की हुई है, दरअसल नहीं है। यानी कि लोगों का देखकर सीखे हैं, किताबों से सीखे हैं! और फिर वाद-विवाद करने लगें तो रुकते भी नहीं है। अरे, जब बहस करने लगे, तब आपको पता नहीं चलता कि बहस करने लगा है! बहस करना यानी खुद का स्थान छोड़कर नीचे गिरना!

हम तो सब कह देते हैं, जैसा है वैसा। फिर अगर हठ पकड़े तो हम समझ जाते हैं कि बहुत भयंकर अज्ञानता है, वह खुद का अहित ही कर रहा है। फिर हम बोलते ही नहीं हैं। हम मौन रहते हैं। हठ करने लगे, तब उसे समझ में ही नहीं आएगी न मेरी बात? समझ में आ जाएगी तो क्या हठ करेगा?

कठिन शब्दों में संपूर्ण वीतरागता

हम तो सामने वाले को सही रास्ते पर लाने के लिए आए हैं। मुझे दुनिया में कुछ भी नहीं चाहिए। यह तो कहाँ उल्टे रास्ते पर चलता जा रहा है और उसी के कारण इतने अधिक दु:ख पड़े हैं। उल्टे रास्ते चलते हैं और फिर ज़िम्मेदारी लेते हैं! दु:ख नहीं पड़ रहे हों तो बात अलग है। सुख उठाकर उल्टे रास्ते पर जा रहा हो तो बात अलग है। यह तो इतने दु:ख सहन करता है और उल्टे रास्ते की ज़िम्मेदारी उठाता है इसलिए हमें करुणा आती है कि तू यह क्या उल्टे रास्ते पर चला जा रहा है!

जो रोग होता है, वह 'ज्ञानीपुरुष' बताते हैं अन्य कोई भी दोष नहीं बताता क्योंकि उन्हें सामने वाले का रोग मिटाना है, डॉक्टर मरीज़ का रोग बढ़ाता है या मिटाता है? और हम कहाँ यह हमारे लिए कह रहे हैं? यह तो आपके लिए

'स्पेशली' और वह भी वीतरागता से कह रहे हैं। शब्द कठोर नहीं होंगे तो रोग नहीं निकलेगा। कठोर शब्द के बिना रोग नहीं निकलता। रोग किससे निकलता है? कठोर शब्द और वीतरागता! कैसे शब्द कठोर, जोड़ों को तोड़ दें ऐसे कठिन और इसके बावजूद भी संपूर्ण वीतरागता!

अधीनता से ज्ञानी के चरणों में मोक्ष प्राप्ति

इस अहंकार ने तो सबकुछ बिगाड़ दिया है, और कुछ भी नहीं। ज्ञानी के अधीन रहें तो हल आ जाएगा। सयाना हुआ अहंकार खुद की होशियारी नहीं लगाता जबकि पागल अहंकार तो कुरेदता है! इसलिए या तो बात को समझना पड़ेगा या फिर ज्ञानी के अधीन रहना पड़ेगा। अधीनता यानी संपूर्ण रूप से निरअहंकारिता अब एक जन्म अधीनता में बिता दो।

प्रश्नकर्ता : अधीनता से तो अच्छा है न, कोई परेशानी तो नहीं रहेगी।

दादाश्री : हाँ, परेशानी नहीं है। सब अधीनता से ही जीवन बिताते हैं लेकिन किसी में अंदर जड़ टेढ़ी हो तो अपना रंग दिखाकर रहती है फिर। अलग नगाड़ा बजाता है!

स्वच्छंद जाए तो खुद ही खुद का कल्याण कर सकता है लेकिन यदि खुद स्वच्छंद निकालने जाए तो निकल नहीं सकता न! स्वच्छंद को पहचानना तो होगा न! कृपालुदेव (श्रीमद् राजचंद्रजी) ने कहा था कि सजीवन मूर्ति के *लक्ष* (जागृति) के बिना जो कुछ भी किया जाता है, वह जीव के लिए बंधन है, यह बात हमारा हृदय है। 'जो कुछ भी करे वह बंधन है, वही स्वच्छंदता है।' तू जो कुछ करता है वह स्वच्छंद ही है। एक बाल बराबर किया तो भी स्वच्छंद ही है। व्याख्यान में जाए या साधु बन जाए, तप-त्याग करके शास्त्र पढ़े, वह सारा स्वच्छंद ही है। तू जो भी क्रिया करता है, वह ज्ञानीपुरुष से पूछकर करना, वर्ना वह स्वच्छंद क्रिया है। उससे तो बंधन में पड़ते हैं।

स्वच्छंद नामक दोष चले जाने के बाद ही 'दादा' के छंद में बैठेगा। स्वच्छंद जाने पर ही स्वरूपज्ञान होगा। जिसमें स्वच्छंदता कम हो, ऐसा मनुष्य कैसा होता है? जैसे मोड़ना चाहो मुड़ जाता है, ऐसा फ्लेक्सिबल होता है। उसे मोक्षमार्ग मिल जाता है। स्वच्छंदी को जैसा मोड़ें वैसे नहीं मुड़ता।

यह संसार ऐसा है कि स्व-मति से नहीं चल सकते। अपने से (दो) पाँच अंश बड़े को खोज निकालना और उनके कहे अनुसार चलना, कब तक? जब तक ज्ञानीपुरुष नहीं मिलते तब तक। 'और कुछ मत खोज, मात्र एक सत्पुरुष को खोजकर, उनके चरणकमल में सर्वभाव अर्पण करके, उनके कहे अनुसार चलता जा। फिर यदि मोक्ष नहीं मिले, तो मेरे पास से लेना।' ऐसा श्रीमद् राजचंद्र जी कहा करते थे।

यदि मोक्ष चाहिए तो आखिरकार ज्ञानी के पास ही जाना होगा। एक घंटे में हम तुझे भगवान पद दे सकते हैं! लेकिन तेरी पूर्ण तैयारी होनी चाहिए।

ज्ञानी का अविनय करना बहुत बड़ा जोखिम है

यहाँ तो परम विनय धर्म होना चाहिए। यहाँ जो जाँच-परख करने आते हैं उन्हें कह देता हूँ, कि आप अकेले ही आना। वर्ना अगर वह बुद्धि पर चढ़ जाए तो फिर क्या होगा? हमारे पास बुद्धि नहीं है। हम सभी प्रश्नों के, संसार के सारे प्रश्नों का (खुलासा) स्पष्टीकरण करने के लिए तैयार हैं लेकिन प्रश्न, प्रश्न के रूप में होने चाहिए। आपके पास जिन प्रश्नों के खुलासे नहीं हों, उन्हें प्रश्न कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : कोई चाहे जितने भी प्रश्न दादा से पूछे, दादा का अपमान करने जाए या तोड़ दें, ऐसे प्रश्न हों तब भी दादा तो वैसे ही, उतने ही मुक्त हास्य सहित रहते हैं।

दादाश्री : नहीं, कभी भी नहीं, ज़रा भी तिरस्कार नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : बल्कि उससे पूछते हैं कि तुम्हें समझ में नहीं आया? जब तक उसे समाधान नहीं होता, उसका कषाय खत्म नहीं हो जाता तब तक दादा नहीं छोड़ते।

दादाश्री : नहीं, यह उसकी जोखिमदारी नहीं है, ज्ञानी की जोखिमदारी है। वह तो बेचारा नासमझ है, वह कुछ भी कह सकता है। ज्ञानी वैसा नहीं कह सकते।

यदि आप उल्टा बोलो फिर भी मुझे सीधा ही बोलना पड़ेगा। आप अविनय करो फिर भी मुझे विनय करना पड़ेगा क्योंकि मैं रिस्पॉन्सिबल (ज़िम्मेदार) हूँ और आप इरिस्पॉन्सिबल (गैरज़िम्मेदार) हो, मैं वह समझ सकता हूँ। क्योंकि उन्हें ज़िम्मेदारी का ध्यान नहीं हैं। और मुझे ज़िम्मेदारी का ध्यान हैं। ये सभी टेढ़े हो सकते हैं लेकिन क्या मैं टेढ़ा हो सकता हूँ? मैं सभी से कहता हूँ कि आप यदि अविनय करोगे तो चलेगा लेकिन मैं अविनय नहीं कर सकता।

आप अविनय करोगे लेकिन फिर भी मैं विनय में ही रहूँगा। आप तो अविनय करोगे ही। यदि आपमें विनय होता तो आप अविनय करते ही नहीं लेकिन यदि कोई और विनय समझकर अविनय करे तो फिर उसकी जवाबदेही है। फिर भी हम उसे समझाते हैं कि 'भाई, ऐसा अविनय करने की ज़रूरत नहीं है, बैठ जा। ज्ञानी का अविनय करना, वह तो बहुत बड़ा जोखिम है इसलिए हम यहाँ से उसे आखरी बार समझाकर भेजते हैं।

नहीं होना चाहिए परम विनय का घात

परम विनय अपना धर्म हैं। हम तो आपके अधीन हैं। आप कहो कि 'दादा, यहाँ बैठे रहिए' तो कहेंगे, 'चलो, कल जाएँगे।' हमें ऐसा नहीं है कि हमें अपनी मरजी से चलना है लेकिन जिसने परम विनय का घात किया, वह 'बिफर गया' कहलाएगा। उसका घात तो होना ही नहीं चाहिए। परम विनय का घात करना और आत्मा का घात करना, वे दोनों एक समान हैं।

जो ज्ञानीपुरुष के प्रति कभी परम विनय चूकता ही नहीं है वह ज्ञानीपुरुष के ध्यान में रहता ही है कि यह कभी भी परम विनय में से विनय में आया ही नहीं है। तब वहाँ पर उनकी विशेष कृपा रहती है,' क्योंकि परम विनय में से विनय में आया हुआ मनुष्य कब अविनयी हो जाए यह कहा नहीं जाता।

प्रश्नकर्ता : तो फिर एक प्रश्न यह रहता है कि दादा कहें, 'बैठ', तो बैठ जाना है और 'खड़े हो जाओ', कहें तब खड़े हो जाना है, वह ठीक है?

दादाश्री : हाँ, ऐसा ही, बस, बस। कभी-कभी ऐसा भी कह सकते हैं, 'आओ, हमारे साथ बैठो', ऐसा कहें तब आपको पूछना है कि 'नीचे बैठूँ या यहाँ पर बैठूँ?' फिर से पूछना क्योंकि वह उनका असली व्यवहारिक स्वभाव निकलता है इसलिए फिर से पूछना पड़ेगा कि आप कहें तो ऊपर बैठूँ, नहीं तो नीचे बैठूँ।' तब यदि कहें, 'नीचे बैठो,' या फिर कहें कि 'ऊपर बैठो' तो ऊपर बैठना भी पड़ेगा।

मोक्षमार्ग का फार्मूला

भगवान ने मोक्षमार्ग पर जाने के लिए सुंदर पद्धति वाला मिक्स्चर बनाया था, जो उन्होंने सब

को बताया था। उन्होंने उस मिक्स्चर का जो फार्मूला दिया था, आज वह फार्मूला ही नष्ट हो गया है। किसी के भी पास नहीं रहा। आज हम आपको वही फार्मूला फिर से दे रहे हैं।

उस मिक्स्चर में बीस प्रतिशत 'शास्त्रों' के, सत्तर प्रतिशत 'ज्ञानी का परम विनय' और दस प्रतिशत 'संसारी भावना' रखना और फिर पीना। तब लोग शास्त्र ही पीते रहे, इसलिए बदहजमी हो गई। भगवान ने कहा था कि दिन में तीन बार यह दवाई हिलाकर पीना। इस पर कई तो, दिन में तीन बार हिलाते ही रहे! और कुछ तो 'हिलाकर पीना है, हिलाकर पीना है' ऐसा गाते ही रहे, बस गाते ही रहे!

प्रेम और परम विनय दिलवाते हैं पूर्णता

यह 'दादा' तो ऐसा निकला है कि जो किसी से खरीदा जा सके, ऐसा नहीं है। सिर्फ परम विनय से ही खरीदा जा सकता है, ऐसा है! विनय और प्रेम को कोई नहीं दुतकार सकता।

प्रश्नकर्ता : आपको देखें तब ऐसा होता है क्या कि दादा, आप इतने अच्छे हो, आपमें कितना प्रेम भरा हुआ है! तो तीर्थंकरों का कितना! महाविदेह क्षेत्र में तो इससे कितना ज़्यादा होगा!

दादाश्री : वह प्रेम ऐसा नहीं होता। यह तो खटपटिया प्रेम है, वह खटपटिया प्रेम नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार आप सीमंधर स्वामी से व्यवहार रखते हैं, उसी प्रकार से हम दादा से कैसा व्यवहार रखें कि वहाँ पर पहुँच जाएँ?

दादाश्री : यह जो रख रहे हो, वही व्यवहार। ऐसा प्रेम और परम विनय, बस वही! बाकी कोई ज़रूरत नहीं है।

संपूर्ण समर्पण वही परम विनय

परम विनय अर्थात् यह कि 'ये दादा ही ज्ञानीपुरुष हैं और ये ही मुझे मोक्ष में ले जाएँगे,' विश्वासपूर्वक निश्चय से ऐसा मानना, वही परम विनय कहलाता है।

परम विनय यानी संपूर्ण समर्पण। जिन्हें परमात्मा व्यक्त हुए हैं ऐसे 'ज्ञानीपुरुष' को पूर्ण रूप से अर्पित हो जाना है। वहाँ हमारा आत्मा आत्मस्वभाव और देह परम विनय में रहता है।

ज्ञानीपुरुष का परम विनय करना वह खुद अपने आत्मा का विनय करना कहा जाएगा। उतना ही आत्मा प्रकट होगा।

प्रश्नकर्ता : परम विनय जितना-जितना बढ़ता है, उतना ही अंदर का हल्कापन बढ़ता है?

दादाश्री : अंदर उतनी ही शक्ति बढ़ती है। उसे आत्मवीर्य कहते हैं, वह धातु मिलाप है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह भाव शुद्ध भाव है, वही परम विनय है।

दादाश्री : परम विनय प्रज्ञा का भाग है। भगवान के साथ धातु मिलाप न हो जाए तब तक परम विनय रहना चाहिए।

जिसमें जितना विनय उतने ही भगवान प्राप्त होते हैं। जिसमें परम विनय पूर्ण रूप से आ जाता है (खुद उसी रूप हो जाता है) तब तो पूर्ण रूप से भगवान प्राप्त हो जाते हैं। भगवान के स्वभाव जैसा ही खुद का स्वभाव हो जाए, उस हद तक हमें परम विनय रखना चाहिए।

जो तत्त्व मुझमें है, वही तत्त्व आप में भी है। सिर्फ विज्ञान ही जानना है। जानकर कृपापात्र बनना है विनय से, परम विनय से। बस, और कुछ नहीं करना है।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

14-18 सितम्बर : सैफ्रोनी-मेहसाना में अपरणीत बहनों के लिए पाँच दिवसीय ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई, जिसमें 421 साधक बहनों ने हिस्सा लिया। शिविर में पहले दो दिन पूज्य श्री द्वारा ब्रह्मयर्च पुस्तक पर पारायण हुआ। बाकी के दो दिन पूज्य श्री द्वारा 'सेवा से होता है ज्ञान प्रैक्टिकल,' टॉपिक पर सत्संग व प्रश्नोतरी सत्संग भी हुआ। ब्रह्मयर्च और सेवा के टॉपिक पर एक्टिविटी तथा आप्तपुत्रियों के साथ GD व PD द्वारा साधिका बहनों को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ इसके अलावा प्रभातफेरी, गरबा, सेवा टॉपिक पर नाटक, सामायिक, पूज्य श्री के साथ डिनर, 'दादा दरबार' में पूज्य श्री के दर्शन वगैरह का भी आयोजन हुआ।

20-24 सितम्बर : सैफ्रोनी मेहसाना में अपरणीत भाईयों के लिए पाँच दिवसीय ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 457 साधक भाईयों ने हिस्सा लिया। शिविर के दौरान पूज्य श्री द्वारा ब्रह्मयर्च पुस्तक पर पारायण और 'सेवा से होता है ज्ञान प्रैक्टिकल,' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुआ। इस बार विशेष साधना व सेवा में जुड़े साधकों के लिए स्पेशल सेशन रखा गया। एक सेशन में सेवा टॉपिक पर एक्टिविटी भी हुई तथा आप्तपुत्रों के साथ GD व PD सत्संग और पूज्य श्री के साथ मोर्निंग वॉक, एवं 'सेवा' थीम पर फोटो सेशन व कैन्डल डिनर, गरबा, सेवा टॉपिक पर नाटक जैसे कार्यक्रम भी आयोजित हुए। अंतिम दिन में 'दादा दरबार' के दौरान पूज्य श्री के दर्शन करके साधकों ने पूज्य श्री से अपनी उलझनें बताकर ज्ञान की चाबियाँ प्राप्त की।

27 सितम्बर : अडालज दादानगर में आयोजित नवरात्रि गरबा में दिनांक 24 और 27 को पधारकर पूज्य श्री ने महात्माओं को दर्शन दिए। दिनांक 26 को पूज्य श्री ने सरप्राइज विजिट देकर महात्माओं को आनंदित कर दिया। हर रोज़ गरबा के अंत में अंबा माता जी की आरती होती थी। 27-28 सितम्बर को 'दादाई गरबा-3' के गायकों ने ओरकैस्ट्रा के साथ लाइव परफोर्मन्स दिया। सभी महात्मा गरबा करते हुए भक्तिरस में डूबकर आनंदित हो उठे।

29 सितम्बर से 6 अक्तूबर : UAE में पूज्य श्री की निश्रा में फुजैरा में 4 दिवसीय शिविर आयोजित हुई जिसमें भारत के 70 और दुबई, शारजाह, अबुधाबी के 150 महात्मा ऐसे कुल मिलाकर 220 महात्मा उपस्थित थे। शिविर के दौरान दुबई के महात्माओं द्वारा पंजाबी पगड़ी पहनाकर भंगड़ा नृत्य करके पूज्य श्री का स्वागत किया। शिविर में प्रश्नोत्तरी सत्संग के अलावा GNC द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, MMHT नाटक, गरबा एवं पूज्य श्री के साथ सामूहिक भोजन तथा 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ। 3 अक्तूबर शाम को पूज्यश्री महात्माओं के साथ अबुधाबी की प्रसिद्ध ग्रान्ड मॉस्क (मस्जिद) देखने गए। दुबई में 4 और 5 अक्तूबर को आयोजित सत्संग में 450 लोग आए थे और 6 अक्तूबर को आयोजित ज्ञानविधि में 250 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

7 - 9 अक्तूबर : मस्कत में 2004 में पूज्य नीरूमाँ के सानध्यि में हुए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम के 13 साल के लंबे अरसे के बाद पूज्य श्री के सानिध्य में पहली बार क्रिष्ना मंदिर हॉल में 3 दिवसीय सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। दो दिवसीय सत्संग में 450 महात्मा व मुमुक्षुओं ने हिस्सा लिया। 9 अक्तूबर को ज्ञानविधि में 225 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। स्थानीय व भारत-दुबई से आए महात्माओं ने पूज्य श्री के साथ इन्फोर्मल समय बिताया। जहाँ अरेबिक महासागर में क्रूज़ में डोलफिन वॉचिंग के साथ बोटिंग गरबा का आनंद उठाया। मस्कत में अंतिम दो साल में आयोजित आप्तपुत्र सत्संग से प्रेरित होकर बहुत सारे मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 (उ.) पर सत्संग पारायण (शिविर)

23-30 दिसम्बर - सुबह 10 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 7- **सत्संग**, रात 8-30 से 9-30 - **सामायिक**
31 दिसम्बर (रवि) - सुबह 10 से 12-30 - **श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 3 दिसम्बर 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

6 जनवरी (शनि), शाम 4 से 7- **सत्संग** तथा **7 जनवरी** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

7 जनवरी (रवि), सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग** (नए मुमुक्षुओं के लिए)

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'साधना' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)

Singapore
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 4 से 4-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA -Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE - **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

हरिद्वार में केवल 'हिन्दी भाषी महात्माओं' के लिए विशेष शिविर

29 नवम्बर (बुध) - सुबह 10 से 12-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
शाम - 4-30 से 6-45 **पूज्यश्री सत्संग** (5 आज्ञा की विशेष समझ - दादावाणी, जून- 2007)
30 नवम्बर (गुरु) - सुबह 10 से 12-30 - **पूज्यश्री सत्संग** (घर में क्लेश मिटाने की कला - दादावाणी, सितम्बर 2014)
शाम - 4-30 से 6-45 - **पूज्यश्री का प्रश्नोत्तरी सत्संग**
1 दिसम्बर (शुक्र) - सुबह 10 से 12-30 - **पूज्यश्री सत्संग** (सेवा और सत्संग का महत्व - दादावाणी, अक्तू - 2007, 2014)
शाम को... **पूज्यश्री के संग गंगा आरती (हरिद्वार में)**
2 दिसम्बर (शनि) - सुबह 10 से 12-30 तथा शाम - 4-30 से 6-45 - **पूज्यश्री का प्रश्नोत्तरी सत्संग**
3 दिसम्बर (रवि) - सुबह 10 से 12 - **चरण स्पर्श दर्शन** तथा शाम - 4-30 से 6-45 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: पतंजलि योगपीठ फेझ-2, दिल्ली-हरिद्वार नेशनल हाइवे, हरिद्वार.
[रूरकी रेल्वे स्टेशन से 16 कि.मी. और हरिद्वार रेल्वे स्टेशन से 19 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।]

सूचना : 1) यह शिविर जिन्होंने आत्मज्ञान लिया है ऐसे हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए ही है। माता-पिता के साथ बच्चे भी आ सकते हैं। 2) शिविर रजिस्ट्रेशन अब बंद हो गया है। जो भी इच्छुक महात्मा है, उन्हें अब सत्संग कोर्डिनेशन ओफिस, अड़ालज, गुजरात पर सीधा संपर्क करना होगा. फोन-9574000946, 9924348880 **3) शिविर में भाग लेने के लिए शुल्क = रु.1200/- (सिर्फ आवास और भोजन का खर्च).** 4) केन्सलेशन चार्ज रु 200/- रहेगा. 4) **गंगा आरती** - हरिद्वार आने-जाने के लिए समय और बस व्यवस्था की सूचना की घोषणा की जाएगी।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

भुवनेश्वर

25 नवम्बर (शनि), शाम 5-30 से 8 -30 - **सत्संग** तथा **26 नवम्बर** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल : रेल ओडिटोरियम, रेल कुटिर कोलोनी, ईस्ट कोस्ट रेल्वे हेडक्वोटर्स के पीछे, चंद्रशेखरपुर. **संपर्क :** 8763073111
27 नवम्बर (सोम), शाम 6 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : IDCOL हाउस, AG स्क्वेयर, IG पार्क के सामने, Unit-2, भुवनेश्वर (उड़ीसा). **संपर्क :** 8763073111

बोटाद

7 व 9 दिसम्बर (गुरु व शनि) रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **8 दिसम्बर** (शुक्र) 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**
स्थल : त्रिवेणी खोडियार मंदिर के पास, विजय पेट्रोल पंप के सामने, पालियाद रोड, बोटाद (गुजरात). **संपर्क :** 9723699912

भावनगर

9 व 11 दिस. (शनि व सोम) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **10 दिसम्बर** (रवि) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**
स्थल : जवाहर मैदान, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मोल के सामने, भावनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9924344425

राजुला

11 व 13 दिस. (सोम व बुध), रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **12 दिसम्बर** (मंगल) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**
स्थल : क्रिष्नानगर सोसायटी, गायत्री मंदिर के पास, राजुला, जि - अमरेली (गुजरात). **संपर्क :** 8140065111

सावरकुंडला

13 व 15 दिस. (बुध व शुक्र) रात 8-30 से 11-30 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **14 दिस.** (गुरु) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**
स्थल : ओपन एयर थियेटर, जनता बाग के पास, सावरकुंडला, जि-अमरेली (गुजरात). **संपर्क :** 9427555476

कडी

8 व 10 जन. (सोम व बुध) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **9 जन.** (मंगल) 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल : श्री खेतीवाडी उत्पन्न बजार समिति, कडी, जि-महेसाणा (गुजरात). **संपर्क :** 9773145031

नवम्बर 2017
वर्ष-13 अंक-1
अखंड क्रमांक - 145

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

परम विनयी पर ज्ञानी की विशेष कृपा

'पाँच आज्ञा में निरंतर रहना है' यह भाव अंदर रहना चाहिए। दूसरी कोई कृपा कहीं से होनेवाली नहीं है। 'परम विनय', इतना ही हमें समझना है और खुद को दादा ने जो कहा है, वैसे ही आज्ञा पालन करने की मज़बूत इच्छा रखनी है। हमें पता चल जाता है कि इसकी इच्छा मज़बूत है या ढीली है! स्कूल में २५-३० बच्चे होते हैं, उनमें से दो-चार बच्चों पर मास्टरजी की ज्यादा कृपा होती है। जो उनके कहे अनुसार लेसन आदि सब करके लाते हैं, उन पर विशेष राज़ी होते है। वैसे ही जो ज्ञानीपुरुष का परम विनय कभी चूकता ही नहीं है, तब वहाँ कृपा विशेष रहती है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.